जिन हाथन हठि हरषि हनत हरनी रिपुनंदन।
तिन न करत सहार कहा मनमत्त गयदत?
जिन बेधत सुख लच्छ लच्छ नृपकुँवर कुँवरमनि।
तिन बानन-बाराह बाघ मारत नहिं सिंहनि।
नृपनाथ नाथ दसरत्थ यह अकथ कथा नहिं मानिये।
मृगराज-राजकुल-कमल तह बालक बृद्ध न जानिये॥18॥

शब्दार्थ—हरनी रिपुनंदन = सिंह का बच्चा। गयंदन = हाथी। लच्छ = लक्ष, लाख। लच्छ = लक्ष्य, निशाने। कुँवरमनि = राजकुमारों में श्रेष्ठ। अकथ = असत्य। मृगराज = शेर। वृद्ध = बड़ा।

प्रसंग—जब विश्वामित्र से अपने यज्ञ की रक्षा के लिये महाराज दशरथ से राजकुमार राम को माँगा तो दशरथ ने कहा कि राम तो अभी बच्चा है, वह राक्षसों का संहार करने में असमर्थ है। दशरथ की इस शंका का निवारण महर्षि विश्वामित्र इस छंद में करते हैं।

व्याख्या—हे राजराजेश्वर महाराज दशरथ! जिन हाथों से (पंजों से) सिंह का बच्चा हठ करके और प्रसन्न होकर हिरणी को मार देता है, क्या उन्हीं पंजों से वह मदोन्मत्त हाथी का संहार नहीं करता? अर्थात् सिंह के के बच्चे के लिए जिस प्रकार किसी मृगी का मारना आसान है उसी प्रकार प्रबल हाथी का संहार करना भी है। राजकुमारों में श्रेष्ठ राजकुमार जिन बाणों से सहज ही हैं लाखों निशानों को बेध देता है, क्या उन्हीं बाणों से वह सूअर, बाघ और सिंह को नहीं मारता? अर्थात् उसे जिस प्रकार लाखों निशानों के बेधने में कोई कष्ट नहीं होता, उसी प्रकार सूअर आदि को मारने में भी उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं करना पड़ता। यह बात प्रायः असत्य नहीं

जानें, क्योंकि जिस प्रकार सिंह-कुल में उत्पन्न हुआ सिंह का बच्चा बच्चा होने पर भी बड़ों की भाँति शक्तिशाली होता है, उसी प्रकार राजकुल में उत्पन्न राजकुमार को भी बच्चा नहीं समझना चाहिए, बल्कि वह बड़ों की तरह शक्तिसम्पन्न और प्रतापशाली होता है। कहने का भाव यह है कि राम देखने में ही बालक दिखाई पड़ते हैं, वरना इनमें बड़ों जैसी शक्ति है और ये हर प्रकार से राक्षसों का विध्वंस करने में समर्थ हैं। अतः हे दशरथ! आपको किसी प्रकार की भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

अलंकार—अनुप्रास, यमक, उदाहरण।